पाठ - 35

FEJ3G7

पण्डित जवाहर लाल नेहरू

भारत के प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू इंग्लैण्ड गए। वहाँ उनकी मुलाकात ब्रिटेन के पूर्व प्रद्दानमंत्री चर्चिल से हुई। पिछली बातों को याद कर चर्चिल ने पूछा-आपने अंग्रेजों के शासन में कितने वर्ष जेल में बिताए थे? "लगभग दस वर्ष"- नेहरू ने कहा। तब अपने साथ किये गए व्यवहार के प्रति आपको हमसे घृणा करनी चाहिए।" चर्चिल ने सवालिया अंदाज में पूछा। नेहरु जी ने उत्तर दिया- "बात ऐसी नहीं है। हमने ऐसे नेता के अधीन काम किया है जिसने हमें दो बातें सिखायी हैं"- एक तो यह कि किसी से डरो मत और दूसरी, किसी से घृणा मत करो। हम उस समय आपसे डरते नहीं थे, इसलिए अब घृणा भी नहीं करते।"

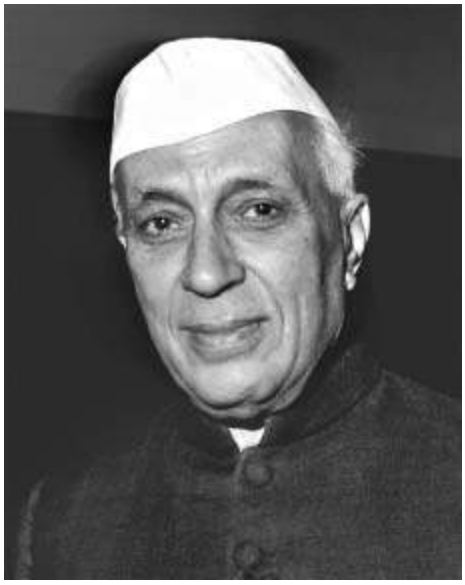

पण्डित नेहरू एक कुशल राजनीतिज्ञ के साथ-साथ उच्च कोटि के विचारक थे। उनकी राजनीति स्वच्छ और सौहार्दपूर्ण थी। स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों में उन्होंने कारावास में रहकर अनेक पुस्तकों की रचना की। 'मेरी कहानी', 'विष्व इतिहास की झलक', 'भारत की खोज' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ है। राजनीति एवं प्रषासन की समस्याओं से घिरे रहने के

बावजूद वे खेल, संगीत, कला आदि के लिए समय निकाल लेते थे। बच्चों को तो वे अति प्रिय थे। आज भी वे बच्चों के बीच 'चाचा नेहरू' के नाम से लोकप्रिय हैं। उनके जन्मदिन 14 नवम्बर को हमारा देश 'बाल दिवस' के रूप में मनाता है।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू का जन्म इलाहाबाद में 14 नवम्बर सन् 1889 ई0 को हुआ। इनके पिता मोतीलाल नेहरू प्रसिद्ध वकील थे। माता स्वरूपरानी उदार विचारों वाली महिला थीं। नेहरू जी की आरम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। अपने षिक्षकों में एक एफ. टी. ब्रुम्स के सानिध्य में रहकर जहाँ इन्होंने अंग्रेजी साहित्य और विज्ञान का ज्ञान प्राप्त किया वहीं मुंषी मुबारक अली ने इनके मन में इतिहास और स्वतन्त्रता संग्राम के प्रति जिज्ञासा पैदा कर दी। यही कारण है कि बचपन से ही उनके मन में दासता के प्रति विद्रोह की भावना भर उठी।

उच्च षिक्षा प्राप्त करने के लिए नेहरू जी को विलायत (इंग्लैण्ड) भेजा गया। वहाँ रहकर उन्होंने अनेक विषयों की पुस्तकों का गहन अध्ययन किया। वकालत की षिक्षा पूरी करने के बाद वे भारत लौट आए और इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत करने लगे। वकालत में उनका मन न लगा। उनके मन में तो देष को स्वतंत्र कराने की इच्छा बलवती हो रही थी। इसी समय उनकी भेंट महात्मा गांधी से हुई। इस मुलाकात ने उनकी जीवनधारा ही बदल दी।

उस समय देष में जगह-जगह अंग्रेजों का विरोध लोग अपने-अपने तरीकों से कर रहे थे। 1919 ई0 में जलियावाला बाग में अंग्रेज अफसर जनरल डायर द्वारा स्वतन्त्रता सेनानियों की नष्संस हत्या की गयी। इससे पूरे देष में क्रोध की ज्वाला धधक उठी। 1920 ई0 में गांधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन चलाया गया। जवाहर लाल नेहरू भी पूर्ण मनोयोग से स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े।

1921 ई0 में इंग्लैण्ड के राजकुमार 'प्रिंस ऑफ वेल्स' के भारत आने पर अंग्रेज शासकों द्वारा राजकुमार के स्वागत का व्यापक स्तर पर विरोध किया गया। इलाहाबाद में विरोध का नेतृत्व पण्डित नेहरू को सौंपा गया। इनके साथ पिता मोतीलाल नेहरू भी थे। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। यह जवाहर की प्रथम जेल यात्रा थी। इसके बाद उन्हें नौ बार जेल यात्रा करनी पड़ी, किन्तु वे विचलित नहीं हुए।

लम्बे संघर्ष के बाद अन्ततः **15 अगस्त 1947 ई0** को देष आजाद हुआ। जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। लम्बी अवधि की परतन्त्रता के बाद देष की आर्थिक स्थिति अत्यन्त जर्जर हो चुकी थी। अपनी दूरदर्षिता और कर्मठता से नेहरू ने कष्षि और उद्योगों के विकास हेतु पंचवर्षीय योजनाओं की आधारषिला रखी। आज देष में जो बड़े-बड़े कारखाने, वैज्ञानिक प्रयोगषालाएँ और विषाल बाँध आदि दिखाई पड़ते हैं, इन्हीं पंचवर्षीय योजनाओं की देन हैं। भाखड़ा नांगल बाँध को देखकर नेहरू जी ने कहा था-

सहिष्णु नेहरू

‘‘सामने के पुलिस अफसर को गिरा कर खुद घोड़े पर चढ़ जाऊँ, यह कितना आसान था। मगर लम्बे अर्से की शिक्षा और अनुशासन ने मेरा साथ दिया और मैंने अपने सिर को मार से बचाने के सिवाय हाथ तक नहीं उठाया’’

-जवाहरलाल
नेहरू

(लखनऊ में साइमन कमीशन का विरोध करते हुए पुलिस की बर्बर पिटाई के समय उनके मन के विचार)

मनुष्य का सबसे बड़ा तीर्थ, मंदिर, मस्जिद, और गुरुद्वारा वहीं है, जहाँ इंसान की भलाई के लिए काम होता है।

नेहरू जी ने देष के चहुँमुखी विकास हेतु अनेक कार्य किए। वे जानते थे कि बिना अणुषक्ति के देष शक्ति सम्पन्न नहीं हो सकता, अतः उन्होंने परमाणु आयोग की स्थापना की। वे परमाणु ऊर्जा को सदैव विकास के कार्यों में लगाने के पक्षधर थे। ट्राम्बे के परमाणु संस्थान में उन्होंने एक बार कहा था-

चाहे जो भी हो, हम किसी भी हालत में अणुषक्ति का प्रयोग विनाषकारी कार्यों के लिए नहीं करेंगे।

जवाहर लाल नेहरू बिना थके प्रतिदिन अठारह से बीस घण्टे कार्य करते थे। महान कवि राबर्ट फ्रास्ट की निम्नलिखित पंक्तियाँ उनका आदर्ष थीं-

वन है सुन्दर और सघन पर मुझको वचन निभाना है

नींद सताए इसके पहले कोसों जाना है,

मुझको कोसों जाना है।

नेहरू जी ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण देष सेवा में लगाया। वे स्वतन्त्रता संग्राम में देष के लिए लड़े और देष को विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में समर्थ बनाया। पचहत्तर वर्ष की आयु में 27 मई 1964 ई0 को अस्वस्थ होने के कारण उनका निधन हो गया। उन्होंने इच्छा व्यक्त की थी कि मष्त्यु के बाद उनकी चिता की भस्म खेतों में बिखेर दी जाय। नेहरू जी की इस इच्छा का पूरा सम्मान किया गया।

देष के इस महान सपूत के कार्य और विचार आज भी हमारा पथ प्रषस्त कर रहे हैं।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. नेहरू जी ने वकालत छोड़ने का निर्णय क्यों लिया?

2. देश के आर्थिक विकास के लिए नेहरू जी ने प्रधानमंत्री के रूप में क्या-क्या कदम उठाए?
3. नेहरू जी को प्रथम बार कब और क्यों जेल जाना पड़ा?
4. 'प्रिंस आॅफ वेल्स' के भारत आगमन पर उनके स्वागत का विरोध क्यों किया गया ?

5. सही मिलान कीजिए-

(क) सन् 1921 ई0 वह स्थान जहाँ जनरल डायर ने निरीह नता पर फायरिंग कराई थी।
(ख) मुंशी मुबारक अली बाल दिवस
(ग) मोतीलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री
(घ) जवाहर लाल नेहरू जवाहर लाल नेहरू के पिता
(ङ) 14 नवंबर एक शिक्षक
(च) जलियाँवाला बाग प्रिंस आॅफ वेल्स का भारत आगमन

6. अपने शिक्षक/शिक्षिका से चर्चा कीजिए-

(क) 14 नवंबर को बाल दिवस क्यों मनाया जाता है?
(ख) जवाहर लाल नेहरू को "चाचा नेहरू" क्यों कहते हैं?

7. अपने स्कूल में 14 नवंबर को साथियों के साथ मिलकर एक मेले का आयोजन कीजिए। इसके लिए कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं-
(क) यह तय कीजिए कि मेले में क्या-क्या होगा- खेल, प्रतियोगिताएँ, वाद-विवाद, नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम....
(ख)साथियों के बीच जिम्मेदारियाँ बाँटंे- कौन क्या करेगा ?
(ग) मेले में गाँव वालों (अपने माता-पिता) को भी साझीदार कैसे बनाएँगे ?
(घ) अपनी बनाई हुई चीजों की प्रदर्शनी लगवाएँ।
(ङ) शिक्षिका/शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए कि और क्या-क्या हो सकता है?